Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्म से फल

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति॥

—अ० १२।३।४८॥

(अत्र) इस न्यायकारी भगवान् की न्याय-व्यवस्था में (न) न तो कोई (किल्बिषं) दोष-त्रुटि है और (न) न ही (आधारः) सहारा-सिफारिश (अस्ति) है और (न) न ही कोई ऐसा उपाय है कि (यत्) जिससे (मित्रैः) मित्रों के (सम्-अममानः) साथ चलकर (एति) जा सके। (नः) हमारा (एतत्) यह—कर्मों से कमाया हुआ (अनूनं) पूरा, जिसमें न्यूनता-अधिकता कुछ भी नहीं हुई ऐसा—(पात्रं) पात्र (निहितं) सुरक्षित रखा है, (पक्तारं) पकानेवाले को (पक्वः) पकाई वस्तु (पुनः) फिर से (आ विशाति) भली प्रकार मिलती है।

इस मन्त्र में कर्म के विषय में महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रकट किये गए हैं। हम जो भी कर्म करते हैं, उनका फल हमें अवश्य मिलेगा, उसमें कोई कमी न होगी क्योंकि ईश्वरीय व्यवस्था में कोई दोष नहीं है। कोई पीर-पैगम्बर, गुरु आदि हमें कर्मफल भोगने से नहीं बचा सकता; वहां किसी की सिफारिश नहीं चलती, और न ही किसी दोस्त, मित्र, बन्धु की कमाई के सहारे हम कोई पुण्यफल प्राप्त कर सकते हैं। हमारे कर्मों से भरा पात्र वैसे ही रहता है। जो कोई भी कुछ पकाता है, वही खाता है, अर्थात् जो भले-बुरे कर्म मनुष्य करता है, वही उसके आगे आते हैं।

कितने सुन्दर एवं सरल शब्दों में और कितनी अनूठी युक्ति से कर्म-सिद्धान्त के रहस्य को वेद ने सुलझाया है। वेद के सिवा और किसी धर्मग्रन्थ में इस प्रकार सरल और विशद उपदेशप्रद सिद्धान्त नहीं मिलते।

—स्वामी वेदानन्द कृत 'वैदिक धर्म' से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध-कथा

सहारा हाथों का !

एक यज्ञ के अनन्तर एक विद्वान् संन्यासी साधकों और यज्ञप्रेमी जनता को उपदेश दे रहे थे कि किसी भी उन्नतिशील मानव को अपनी वाणी और पाणि-हाथों का उचित प्रयोग करना चाहिए। वाणी के अनुचित प्रयोग से युद्ध हो जाते हैं। इस लोकोक्ति में बड़ा सार है–

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवाद-शस्येभ्य गां चरन्तीं निवारय।।

इस महीयसी उक्ति में नसीहत दी गई है कि यदि तुम केवल एक अच्छे कार्य से जगत् और समाज का हृदय जीतना चाहते हो तो अपनी जिह्वारूपी गाय को दूसरों की फसल से या परनिन्दा के कार्य से पराङ्मुख हो जाना चाहिए।

इसी प्रकार व्यक्ति अपने हाथों से ही कर्मभूमि में भले-बुरे कार्य करता है। कर्मयोगी की कर्मों की साधना से उसके दाहिने हाथ में ऐश्वर्य और यश मिलता है तो उसके दूसरे हाथ में जय की उपलब्धि होती है।

विद्वान् संन्यासी महात्मा ने कहा–वाणी-पाणि का सदा ठीक प्रयोग करना चाहिए, परन्तु कई बार व्यक्ति अपने किन पूर्व जन्मों के पापों का या किस कार्य की सजा पा रहा होता है, देखकर समझ में नहीं आता। संन्यासी जी ने कहा–"तब बचपन में लाहौर में पढ़ते थे। बच्छोवाली के इलाके में एक चादर बिछी होती थी, उस पर रोज हाथ-पैरों से विहीन एक किशोर रोता-कलपता-बिलखता रहता था। उसके पास की चादर पर उसकी अवस्था देखकर जनता उस पर पैसे रुपये न्यौछावर करती थी। एक दिन यत्न कर एक तुच्छ धनराशि का जुगाड़ कर उस अनाथ अपाहिज किशोर की चादर पर न्यौछावर कर उससे पूछ बैठा–"तुम्हारे हाथ-पैर दोनों नहीं। क्या तुम्हारा कोई सगा रिश्तेदार नहीं? तुम्हारे ये पैसे रुपये कौन इकट्ठे करता है? कौन तुम्हें खिलाता है, कौन तुम्हारे नित्य कर्म करवाता है?"

ये वचन सुनते ही किशोर की आंखों में आंसू टपक पड़े। बोला–"आपने तो मेरी जिन्दगी के जख्म पर हाथ रख दिया। मेरे माता-पिता बचपन में ही हमारा साथ छोड़ गए थे। कोई दूसरा सगा सम्बन्धी नहीं। एक अकेली बहन है। वही ये पैसे इकट्ठे करेगी, मुझे ठिकाने तक पहुंचाएगी। मेरी सफाई और नित्यकर्म वही करती है, वही मेरी मां-सर्वस्व है। अपने को भुलाकर वह मेरी जीवन की गाड़ी भी हिम्मत से चला रही है, भगवान् उसे लम्बी उम्र और ताकत दे। आज मेरे हाथ-पैर नहीं, उसके हाथ-पैर ही मेरे सहारे हैं।"

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४५, अंक १२ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये जुलाई १९९६

सम्पा० अजयकुमार आ० सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

विश्व को भारत की देन : भारत का दार्शनिक चिन्तन

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

विश्व में भारतीय दार्शनिक विद्या का अवदान

धर्म, ज्ञान, दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में भारतीय अध्यात्म-विद्या या दार्शनिक चिन्तन का योगदान उल्लेखनीय है। भारतीय दर्शन के दो भाग हैं—आस्तिक और नास्तिक। वेद को प्रमाण मानने वाले छह दर्शन कहे जाते हैं—१. न्याय, २. वैशेषिक, ३. सांख्य, ४. योग, ५. मीमांसा और ६. वेदान्त। इन छहों दर्शनों में वेद के इस निष्कर्ष को पुष्ट किया गया है—आत्मा न उत्पन्न होता है, न नष्ट होता है, वह सर्वथा अविकृत है।

नास्तिक या अवैदिक दर्शन तीन हैं—१. चार्वाक, २. जैन और ३. बौद्ध। कई सूक्ष्मतत्त्व-विवेचक बौद्ध दर्शन के भी वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक चार अवान्तर भेद करते हैं। इन तीनों नास्तिक दर्शनों में भी बहुत गहरा चिन्तन है। प्राणिमात्र को जीवन का सच्चा आनन्द कैसे मिले, इसी की उनमें गहराई से खोज की गई है। इन सभी वैदिक और अवैदिक, आस्तिक और नास्तिक दर्शनों की मान्यता है कि सच्चे आनन्द की प्राप्ति के लिए मुक्ति के लिए, मोक्ष के लिए सब से अनिवार्य शर्त है—शुद्ध और पवित्र जीवन।

भारतीय चिन्तन में कर्म के सिद्धान्त पर बल दिया गया है। जैसा कर्म करोगे, वैसा फल मिलेगा। मानव को सदा सत्कर्म करने चाहिएं, उसी स्थिति में हमें उत्तम फल मिलेंगे। अच्छे-बुरे कर्मों के

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अनुसार ही मानव को उसका अगला जन्म मिलेगा । इन्हीं कर्मों के अनुसार उसे स्वर्ग, नरक या मोक्ष मिलता है ।

एक कठिन साधना–आत्म-विजय

आधुनिक जीवन अपनी समस्त क्रियाशीलता और त्वरित परिवर्तनों के साथ वस्तुतः क्या अर्थ रखता है, उसका क्या प्रयोजन है, जैसा कि पश्चिम के चिन्तक सुकरात ने कहा है–सब प्रकार के अनुसन्धानों में सर्वोत्तम यह है कि यह अध्ययन किया जाए कि मनुष्य को क्या होना चाहिए और क्या करना चाहिए।

इसी के साथ मानव जीवन के विश्लेषक और मानव इतिहास के एक तत्त्वदर्शी विद्यार्थी को यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि मानव इतिहास आकारहीन, रूपहीन निरपेक्ष घटनाओं की शृंखला नहीं है, यह एक सार्थक प्रक्रिया है, एक महत्त्वपूर्ण विकास है। जो विवेचक उसे ऊपरी दृष्टि से देखते हैं, वे युद्धों, महायुद्धों में आर्थिक अव्यवस्थाओं और राजनीतिक उत्क्रान्तियों के प्रवाह में ही बह जाते हैं। किन्तु एक गहन विश्लेषण से मानव के मर्यादित प्रयास और विश्व के विराट् प्रयोजन के मध्य तनाव-सा दिखाई देगा । एक सामान्य मानव अनिश्चित विरोध की स्थिति में नहीं रह सकता, उसे सदा एक सामंजस्य की खोज रहती है ।

यद्यपि पश्चिम की दृष्टि में पहली बार समस्त भूग्रह एक इकाई बन गया है । आर्थिक और राजनीतिक घटनाएं समस्त विश्व को एक इकाई समझने के लिए विवश कर रही हैं । विश्वभर की प्रमुख मुद्राएं परस्पर सम्बद्ध कर दी गई हैं, व्यापार-वाणिज्य अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है । दूसरी ओर भारतीय चिन्तन में कहा गया है–

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ ना पिपर्तु ॥

भूमि हमारी माता है, हम पृथिवी के पुत्र हैं, मेघ हमारे पिता हैं, वे हमें पवित्र करते हुए पुष्ट करें। उदात्त भारतीय चिन्तन में प्राणि-मात्र सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण-अभ्युदय के लिए हार्दिक मनोकामना है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

सब का भला करो भगवन्, सब पर दया करो भगवन्, सब पर कृपा करो भगवन्, सब का सब विधि हो कल्याण ।

भारतीय चिन्तन में शताब्दियों से पुकार-पुकार कर अनुरोध किया गया है–दूसरों के ऊपर राजा न बनो, अपने ऊपर राजा बनो, केवल आत्मविजय, कठोर तपस्या, एकता और विश्वबन्धुत्व से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
जीवन की पूर्णता पाई जा सकती है ।

भारतीय शास्त्रों एवं चिन्तन में मानव के लिए चार पुरुषार्थ करने का सत्परामर्श दिया गया है। ये हैं—१.धर्म २. अर्थ ३. काम और ४. मोक्ष। इन्हें भारतीय संस्कृति के चार स्तम्भों के रूप में भी जाना जाता है। जिन सत्कर्मों से समाज धारण किया जाता है, जो समाज के आधार हैं। वे सत्कर्म हैं—धर्म, काम यानी कामना या इच्छा होनी चाहिए। मानव कामनाएं और सदिच्छाएं करे, परन्तु ये सब सत्कर्म धर्म के अनुकूल और धर्म की मर्यादा से नियन्त्रित होनी चाहिए। अर्थ यानी धन, सम्पदा। व्यक्तिगत, सामाजिक कार्यों के लिए धन और सम्पदा चाहिए, परन्तु यह धन संपदा भी धर्म के अनुकूल एवं धार्मिक मर्यादा के अन्तर्गत प्राप्त होने चाहिए । मोक्ष यानी मुक्ति, जन्म-मरण के बन्धनों से छुटकारा। व्यक्ति ऐसे सत्कर्म धर्म के अनुकूल-धार्मिक मर्यादा से करे, जिससे मानव जन्म-बन्धन के आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर ले । यही उन्नति-मुक्ति का सच्चा मार्ग है ।

भारतीय आस्तिक दर्शनों-वैदिक दर्शनों में प्रकृति, पुरुष, जीव, आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि गहन तत्त्वों पर गम्भीरता से विचार किया गया है । आस्तिक वैदिक दर्शनों के प्रणेता ऋषि-मुनि कितने सात्त्विक विचारों के सीधे-साधे तपस्वी साधु थे, इसके उदाहरण मुनि कणाद थे । वह वैशेषिक दर्शनों के प्रणेता कणाद, कणभक्ष, कणभुज और काश्यप आदि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं । महर्षि कणाद का संक्षिप्त परिचय इतना ही है कि वह उच्च कोटि के दार्शनिक चिन्तक और विचारक थे तो गजब के त्यागी, तपस्वी और साधु भी थे । खेतों में फसल कटने के बाद उसमें जो कुछ अन्न-कण बचते थे, उनका दाना-दाना एक-एक अन्न-कण एकत्र कर-बीन कर वह लाते थे और अपनी आजीविका चलाते थे, इसी से उन्हें कणाद विशेषण या संज्ञा से पुकारा जाता था । वह अपने समय के सूक्ष्म अणुवाद के सिद्धान्त के प्रवर्त्तक भी कहे जाते हैं ।

इसी प्रकार योगदर्शन के प्रवर्त्तक सुप्रसिद्ध दार्शनिक पतञ्जलि-पाणिनि के सूत्रों पर लिखे संस्कृत व्याकरण के अमर ग्रन्थ महाभाष्य के प्रणेता भी कहे जाते हैं। उनका सत्परामर्श था—एक-एक शब्द भी व्यक्ति को भली प्रकार जान कर उसका समुचित प्रयोग करना चाहिए। उसी से वह स्वर्ग और इहलोक में इच्छाओं को प्राप्त कर सकता है। **एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति ।**

स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि भारतीय जीवन-प्रणाली के प्रमुख पुरुषार्थ एवम् आधारस्तम्भ धर्म का स्वरूप क्या है ? वैसे तो धर्म के अनेक लक्षण कहे गए हैं, परन्तु एक सामान्य जिज्ञासु के लिए

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म का यह स्वरूप अधिक बुद्धिसंगत है–अपने से प्रतिकूल व्यवहार या आचरण दूसरों से भी न करो–'**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**' मीमांसा दर्शन में महर्षि जैमिनि कहते हैं–**अथातो धर्मजिज्ञासा**–धर्म विषय की जिज्ञासा का विवेचन या समाधान ही इस शास्त्र का प्रयोजन है। **धर्माख्यं विषयं वस्तु मीमांसायाः प्रयोजनम्।** मीमांसादर्शन में ही कहा गया है–जिससे सांसारिक उन्नति हो और मोक्ष की भी प्राप्ति हो, उसका नाम धर्म है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

–मीमांसादर्शन १।१।२

आजकल योग के बारे में बहुत कुछ सुनने-जानने का प्रयत्न हो रहा है। योग का अर्थ है–हमारी प्रकृति के विभिन्न पक्षों को सन्तुलित करने की प्रक्रिया और साथ ही उससे उपलब्ध हितकारी परिणाम। श्रीमद्भगवद्गीता के एक श्लोक में कहा गया है–इस संसार की जड़ें आकाश में हैं और उसकी शाखाएं पृथ्वी में फैली हुई हैं। मनुष्य की जड़ें अदृश्य में हैं,जबकि उसका जीवन दृश्य जगत् की प्रवहमान धारा से सम्बन्धित है। गीता के श्लोक इस प्रकार हैं–

ऊर्ध्वमूलमधः - शाखम् अश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके॥

–गीता १५।१-२

मानव कोई पौधा या प्राणी नहीं, वह एक चिन्तनशील आध्यात्मिक प्राणी है जो अपनी प्रकृति को उच्चतर प्रयोजनों की सिद्धि के लिए नियोजित करता है। वह जो है और जो होना चाहता है, उसके मध्य बराबर एक तनाव बना रहता है।

भारतीय चिन्तन अध्यात्म प्रधान है। मन्त्रद्रष्टा वैदिक ऋषियों ने अपनी आध्यात्मिक साधना से परमात्म तत्त्व के विश्वम्भर स्वरूप का जो योग प्रस्तुत किया है, उससे भारत की आध्यात्मिक संस्कृति एवं स्वरूप की व्यवस्थित झांकी मिलती है। वैसे सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव ऊहापोह में पड़ा रहा है, वह कौन है, कहां से आया है, उसके जीवन का लक्ष्य क्या है, यह संसार क्या है, इस विश्व-ब्रह्माण्ड-संसार से मानव की मुक्ति कैसे हो? यदि इस सृष्टि का नियामक या स्रष्टा कोई है तो उस की तथा सच्चे सुख या आनन्द की उपलब्धि कैसे हो। यह आत्मा, प्रकृति और परमात्मा के तत्त्वों की स्थिति क्या है और उनका एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है ? ऐसे अनेक प्रश्नों या जिज्ञासाओं का समाधान दर्शन शास्त्र से सम्भव है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय दर्शन शास्त्र का लक्ष्य

प्राचीन भारतीय मानस ने ज्ञान की जिन विविध शाखाओं का विकास किया था, उनमें दार्शनिक चिन्तन के क्षेत्र में उनकी श्रेष्ठ उच्च उपलब्धियां हैं । भारतीय परम्परा के अनुसार दर्शन को एक महत्तम श्रेष्ठ ज्ञान के रूप में अंगीकार किया जाता है । उपनिषदों की मान्यता है—परा विद्या से अक्षय सत्य उपलब्ध होता है। **यया तद् अक्षरं अधिगम्यते** । दूसरा सब कुछ निम्न या अपरा है । गीता के शब्दों में—दार्शनिक चिन्तन ही विद्याओं की विद्या **'अध्यात्मविद्या विद्यानाम्'** है । भारतीय दर्शन विश्व की सर्वाधिक प्राचीन दार्शनिक परम्परा है, न केवल उनका सर्वाधिक दीर्घकालीन और सर्वाधिक निरन्तर प्रचलित विकास का सिलसिला रहा है, प्रत्युत उसमें विविध प्रकार की विपुल अभिवृद्धि आधुनिक समय तक हुई है ।

भारतीय दार्शनिक चिन्तन का मूल वेदों में है । उनमें दो विचार-धाराएं मीमांसा और वेदान्त पूर्णतया वैदिक हैं और दूसरे चार दार्शनिक चिन्तन सांख्य और योग, वैशेषिक और न्याय का मूल वेदों में है । इसी दृष्टि से ये छह दर्शन वैदिक या आस्तिक कहलाते हैं और उनका दो दार्शनिक चिन्तन बौद्ध और जैन दर्शनों से भेद किया जाता है। इन दोनों को नास्तिक कहा जाता है, क्योंकि वे वैदिक प्राधिकार को स्वीकार नहीं करते, परन्तु इन सभी आठ दार्शनिक विचार-धाराओं को वेदोत्तर काल के चिन्तकों के विचार-मन्थन का फल कहा जा सकता है ।

भारतीय दार्शनिक चिन्तन की प्रत्येक धारा को 'दर्शन' कहा जाता है जिसका अर्थ सत्य का एक दर्शन या दृष्टि है। प्रत्येक विचार-धारा को एक 'शास्त्र' कहा गया है जैसे कि वह चिन्तन की व्यवस्थित प्रणाली हो । भारतीय दर्शन चिन्तन का कोरा अध्यवसाय ही नहीं है, प्रत्युत यह सत्य का ऐसा प्रयोग है जिससे व्यवस्थित जीवन जी कर काल अवकाश से बंधे जीवन कारण और कार्य और जन्म-मृत्यु की शृंखला को छिन्न-भिन्न कर मुक्ति पाई जा सकती है । इस तरह से कह सकते हैं कि जीवन की आशा और आकांक्षा केवल भौतिक उपलब्धि (अर्थ) आनन्द (काम) को पाना ही नहीं है, प्रत्युत सद्गुण तथा नैतिकता से ओतप्रोत जीवन को उज्ज्वल करना (धर्म) और आध्यात्मिक ज्ञान और सच्ची स्वाधीनता या मुक्ति-मोक्ष प्राप्त करना है । इन चारों लक्ष्यों में सब से बड़ा मोक्ष अन्तिम है और उसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारतीय दर्शन या चिन्तन की विचारधाराएं प्रवृत्त हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन या दार्शनिक चिन्तन का मार्ग व्यवस्थित है और उससे आचारशास्त्र और धर्म पृथक् नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं । इस सत्य को प्राप्त करने और इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति ही चरम अनुभव है ।

मानवीय चिन्तन का व्यवस्थित विकास

भारतीय धार्मिक चिन्तन एवं वैदिक धर्म की स्थापना किसी एक व्यक्ति ने नहीं की। सम्भवतः यही कारण है कि वैदिक एवं हिन्दू धर्म में विविध प्रकार के अनेक दर्शन हैं, यहां विविध प्रकार की उपासनाएं प्रचलित हैं । महत्त्वपूर्ण बात है कि किसी का किसी से कोई विरोध नहीं है, इसमें निर्गुण और निराकार की उपासना है तो सगुण और साकार की भी । यहां अद्वैत विचारधारा के मानने वाले हैं और विशिष्टाद्वैत और द्वैत मन्तव्य मानने वाले भी हैं । यहां ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाली छह दार्शनिक चिन्तनधाराएं हैं तो ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष विपक्ष में ऊहापोह में समय को व्यर्थ खोने की अपेक्षा जगत् में व्याप्त दुःख, कष्ट, हिंसा का अन्त कर प्राणिमात्र का कल्याण चाहने वाली छह नास्तिक या अवैदिक विचारधाराएं भी मान्य हैं । सब को छूट और अवसर है कि वे अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार अपना दार्शनिक मन्तव्य एवं चिन्तन रख सकें । ऐसी स्वाधीनता एवं छूट संसार के किसी और दार्शनिक धर्म एवं चिन्तन में नहीं है । किसी एक नाम-धारी महापुरुष ने नहीं, प्रत्युत बड़े-बड़े अनेक चिन्तकों और विद्वान् ऋषियों ने हजारों या उससे भी दीर्घकालावधि में इस उन्मुक्त भारतीय दार्शनिक चिन्तन या मानवधर्म का व्यवस्थित विकास किया है ।

एक समय था जब पश्चिमी विद्वानों और अनेक भारतीय विद्वानों की धारणा थी कि भारतवर्ष में विचारों उन्मुक्तता, स्पष्टता एवं बन्धनहीन प्रस्तुतिकरण एवं दार्शनिक चिन्तन पाश्चात्त्य सभ्यता संस्कृति के सान्निध्य और प्रभाव के फलस्वरूप हुआ है, परन्तु इस धारणा को भारत के दर्शन-ग्रन्थों एवं दार्शनिक चिन्तन के व्यापक आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनग्रन्थों एवं विचारधाराओं ने पूर्णतया ध्वस्त कर दिया है। भारत में चिन्तन एवं विचारों की उन्मुक्तता और स्वतन्त्र अभिव्यक्ति अत्यन्त प्राचीनकाल से रही है । यह भारतीय संस्कृति का मौलिक आधारभूत तत्त्व है जिसके फलस्वरूप विविधता एवम् अनेकता में एकत्व की स्थापना का यत्न किया गया है ।

भारतीय दर्शन-ग्रन्थ उपांग भी कहलाते हैं । इन छह आस्तिक दर्शन-ग्रन्थों में कौन पहले सूत्रबद्ध किया गया और उसके बाद इन दर्शनों के निर्माणकाल के पौर्वापर्य का निर्णय करना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना इन दर्शनग्रन्थों के मन्तव्य और गन्तव्य को भली प्रकार समझना। ये सभी आस्तिक वैदिक दर्शन भिन्न-भिन्न मार्गों से मोक्ष की प्राप्ति के साधन बतलाते हैं । सांख्यदर्शन कर्म की प्रधानता मानता है और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
योगदर्शन साधनों की । वैशेषिक पदार्थों के ज्ञान पर बल देता है और न्याय ज्ञान के साधन प्रमाणों पर । पूर्वमीमांसा में यज्ञों की विधि और उनमें प्रयुक्त करने वाली क्रियाओं और नियमों की व्याख्या है तो उत्तरमीमांसा ही वस्तुतः वेदान्त है । उस दर्शन में ब्रह्म के स्वरूप का निरूपण किया गया है । इन सब आस्तिक वैदिक दर्शनों का उद्देश्य समान लक्ष्यप्राप्ति होते हुए भी अनेक भिन्नताएं या मतभेद हैं । ये भिन्नताएं और मतभेद सिद्धान्तविषयक हैं और विचार-पद्धति विषयक भी । सभी दर्शनों में अपने-अपने मतों की पुष्टि पूरी तत्परता से की गई है । विचारों की शैली इतनी गम्भीर और पैनी है कि पश्चिम के विद्वान् भी उसे देखकर चकित हो गए । प्रत्येक दर्शनकार ने जिस भी दार्शनिक चिन्तन के विषय पर विचार किया है तो पूरी गहराई और लगन से किया है।

ऊंचा दार्शनिक चिन्तन

भारतीय वैदिक या अवैदिक । आस्तिक और नास्तिक दर्शनग्रन्थ मूल रूप से विचारात्मक हैं, उनसे संस्कृति के अन्य पहलुओं पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता । सांख्यदर्शन में जो दृष्टान्त दिए गए हैं, केवल उनसे उस समय की जनश्रुतियों और लोक-गाथाओं का कुछ परिचय मिलता है। ये सभी दर्शन ग्रन्थ तत्कालीन ऊंचे दार्शनिक चिन्तन का सार प्रतिपादित करते हैं ।

यह भी उल्लेखनीय है कि इन दर्शन-ग्रन्थों के स्रष्टा अपने-अपने क्षेत्र की विचार-धाराओं के प्रवर्त्तक हैं । यह देख कर कुतूहल बढ़ता है कि बौद्धदर्शन एवम् आधुनिक विकासवाद के मूल तत्त्व एवं बीज सांख्यदर्शन में निहित हैं, आधुनिक तर्कशास्त्र (लॉजिक) के मूल तत्त्व एवं बीज न्यायदर्शन और सम्पूर्ण अध्यात्मवाद के मूल तत्त्व वेदान्त या उत्तरमीमांसा में देखे गए हैं । यह भी कुतूहल और अध्ययन का विषय है कि वेदों, उपनिषदों, आरण्यकों, ब्राह्मणों आदि प्राचीन ग्रन्थों के विराट् वाङ्मय के मूल चिन्तन को बड़ी बारीकी और कौशल से ग्रहण कर दर्शनकारों ने उनका विकास किया है । इस प्रकार हम अनुभव करते हैं कि जहां भारतीय तत्त्वज्ञान की विविध धाराएं शतमुख होकर फैलती गईं, वहां उनका अपने मूल से सम्बन्ध विच्छेद नहीं हुआ ।

बाद के उत्तरकाल में बौद्ध, आर्हत, लोकायत (चार्वाक) आदि अनेक चिन्तनों एवं दर्शनों की रचना हुई, इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन में प्राचीन आस्तिक वैदिक दर्शनों या चिन्तन का खण्डन किया गया परन्तु यह भारतीय संस्कृति की विशाल हृदयता का ही पुष्टतर प्रमाण है कि उन अवैदिक नास्तिक दर्शनों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
दर्शनशास्त्रों में गिन कर उन्हें सर्वदर्शन-संग्रह का अंग बना दिया गया।

प्रौढ़ मानस की सहिष्णुता

हमारी संस्कृति की कहानी : हमारी पूर्वी विरासत (द स्टोरी आफ सिविलिजेशन : अवर ओरिएण्टल हेरिटेज (१९३५) पृ० ६३३) में विलियम डुरैण्ट ने लिखा है कि हिमालय जैसे ऊंचे पर्वत की रुकावट रहते हुए भी भारत ने व्याकरण, तर्क, दर्शनशास्त्र, पौराणिक कथाएं, सम्मोहन विद्या (हिप्नोटिज्म) और शतरंज का खेल आदि उपहार हमें दिए हैं और इनसे भी बढ़कर भारत ने जो चीजें हमें दी हैं, वे हैं हमारी संख्यांक और दशमलव-पद्धति, किन्तु ये चीजें भारत की आत्मा का सार रूप नहीं हैं, हम भविष्य में भारत से जो कुछ सीख सकते हैं, उसके सामने ये वस्तुएं नगण्य हैं। जैसे-जैसे वैज्ञानिक आविष्कार, उद्योग और व्यापार महाद्वीपों को घनिष्ठता के बन्धन में बांधते जा रहे हैं। जैसे-जैसे ये हमें एशिया के साथ प्रतियोगिता के संघर्ष में डाल रहे हैं, वैसे-वैसे हम इसकी सभ्यता का निकटता से अध्ययन करते जाएंगे और चाहे शत्रुता के भाव से ही क्यों न हो, हम इसकी जीवन-विधियों और विचारों में से कुछ न कुछ तो अवश्य ही आत्मसात् करेंगे। सम्भवतः हमारी विजयों, उद्धतता और लूटपाट के बदले में भारत हम को प्रौढ़ मन की सहिष्णुता और भलमनसाहत का पाठ पढ़ाएगा। उससे हमें प्राप्त होगी अलिप्सु आत्मा की शान्त तृप्ति, सहानुभूतिपूर्ण चेतना की शान्ति और सभी प्राणियों के लिए समानभावना का शान्तिप्रद प्रेम का सन्देश।

चिरन्तन ज्ञान की प्राप्ति

प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक एवं तत्त्वचिन्तक डॉ० राधाकृष्णन् ने ठीक ही लिखा है—"मानव परिवार की कोई शाखा यदि आध्यात्मिक या वैज्ञानिक क्षेत्र में कोई प्रगति करती है तो उसका लाभ उस अकेली शाखा को नहीं मिलेगा, वरन् समस्त मानव जाति उससे लाभान्वित होगी।....प्राचीन भारत का रहस्यवाद अथवा आधुनिक यूरोप का बुद्धिवाद किसी ऐसी वस्तु का ही परिपूर्ण विकास है जिस पर मनुष्य होने के नाते हर मनुष्य का अधिकार है। आज जिस नये संसार की अवतारणा हो रही है, वह किन बातों में पुराने संसार से भिन्न है, इसका पर्यवेक्षण करने वाला व्यक्ति यह स्पष्टतः समझ रहा है कि हम एक ऐसे युग में हैं, जिसमें संस्कृतियों का सम्मिश्रण हो रहा है। किसी भी सभ्यता के हृदय तक पहुंचने के लिए हमें उसकी विचारणा का, उसके धार्मिक आदर्शों के गुप्त स्रोतों का अध्ययन करना चाहिए। आरम्भ से ही धर्म मानव-संस्कृति का वाहक रहा है। धर्म मनुष्य के समग्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुभव की सर्वाधिक महती उपलब्धि है। यह जीवन का वह गम्भीरतम रूप है, जिसमें मानव जीवन के विभिन्न जटिल और संघर्षशील स्वरूप प्रतिबिम्बित होते हैं। लाखों मनुष्यों के मन, उनके विचार और स्वप्न किसी भी धर्म का निर्माण करते हैं। संसार के एक बड़े भाग ने अपनी धार्मिक शिक्षा भारत से प्राप्त की थी। अन्धविश्वास और धर्मशास्त्रीय संभार के साथ निरन्तर संघर्ष करते रहने के बावजूद भारत शताब्दियों तक आत्मा के आदर्शों का दृढ़ता से पालन करता है। (प्राच्य धर्म और पाश्चात्त्य विचार, भारत और पाश्चात्त्य धार्मिक विचार, पृ० १३३)

"चीनी और हिन्दू सभ्यताएं उन उच्च गुणों की दृष्टि से महान् नहीं हैं, जिन्होंने पश्चिम के उद्यमशील राष्ट्रों को विश्व इतिहास के रंगमंच पर गत्यात्मक शक्ति बना दिया है। वे गुण हैं--महत्त्वाकांक्षा और साहसिकता, श्रेष्ठता और साहस, सार्वजनिक भावना और सामाजिक उत्साह के गुण। चीन और भारत के लोगों के नाम हम प्रायः उन लोगों में नहीं पाते जो वैज्ञानिक शोध के लिए अपने जीवन को संकट में डालते हैं, जो उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव के पथ पर भटकते हैं, जो महाद्वीपों की खोज करते हैं, जो पूर्वप्रतिष्ठित कीर्तिमानों को तोड़ते हैं, जो पर्वत-शिखरों को पदमर्दित करते हैं और अज्ञात भूखण्डों का अनुसन्धान करते हैं, इसके बावजूद ये दोनों सभ्यताएं चिरकाल से जीवित रही हैं, उन्होंने अनेक संकटों का सामना किया है और अपनी विशिष्टता को सुरक्षित रखा है। इतने युगों से इनका टिके रहना यह सूचित करता है कि उन में जीवन की एक स्वस्थ मूलचेतना है, एक विचित्र जीवनी शक्ति है, एक ऐसी धारणा शक्ति है, जिसके कारण उन्होंने ऐसे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्त्तनों को झेल लिया, जिनमें पड़कर कम शक्तिशाली सभ्यताएं तो विनष्ट हो चुकी होतीं। भारत का उदाहरण है, उसने सदियों तक युद्धों, आक्रमणों, महामारियों और मानवीय कुशासन को सहन किया है, कुल मिला कर प्राच्य सभ्यताएं जीवन की यथार्थ परिस्थितियों को समुन्नत करने और सुधारने में उतनी रुचि नहीं रखतीं, जितनी कि इस बात में कि इस अपूर्ण संसार का अधिकतम सदुपयोग किया जाए, इससे सन्तोष और तृप्ति प्राप्त की जाए, प्रसन्नता और सन्तुष्टि, धैर्य तथा सहिष्णुता के गुणों का विकास किया जाए। वे प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्द्विता की सम्भावना से प्रसन्न नहीं होतीं। उनका तो उद्देश्य रहा है कि कम इच्छा करना और चिन्तन ज्ञान-जिज्ञासाओं की तृप्ति करना (प्राच्य धर्म और पाश्चात्त्य विचार, पृष्ठ २८१-२८२)

भारतीय धर्म एवं दार्शनिक विचारों अथवा भारतीय चिन्तन को समझने के लिए प्रमुख भारतीय दर्शनशास्त्रों का अनुशीलन एवम्

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्ययन आवश्यक है । इस में सन्देह नहीं कि भारतीय दर्शन एवं दार्शनिक चिन्तन विश्व की एक सर्वाधिक प्राचीन दार्शनिक परम्परा को संजोए हुए हैं । यह न केवल सर्वाधिक विराट् और सर्वाधिक निरन्तर विकास की कड़ी है, प्रत्युत एक प्रचुर एवं विविध समुन्नति का प्रतीक है ।

दार्शनिक विचार-विमर्श में निमग्न प्राचीन भारतीय मानस ने भारतीय दार्शनिक चिन्तन की छह प्रमुख विचार-धाराएं प्रस्तुत की हैं। उन्हें लोक-परम्परा में दर्शन नाम दिया गया है । ये सभी दार्शनिक विचार-धाराएं वेदोत्तर युग के महान् दार्शनिक चिन्तकों के गहन विचार-विमर्श के फलस्वरूप बद्धमूल एवं विकसित हुई हैं ।

प्रमुख भारतीय वैदिक या आस्तिक दर्शन छह हैं । इन वैदिक दर्शनों में वेद के इस निष्कर्ष का समर्थन किया गया है—'आत्मा न उत्पन्न होता है, न नष्ट होता है, वह सर्वदा अविकृत रहता है ।''

पहला न्यायदर्शन—न्याय का सहारा लेकर आत्मदर्शन के लिए प्रवृत्त होने के कारण यह दर्शन न्यायदर्शन कहलाता है ।

दूसरा वैशेषिकदर्शन—जिस प्रकार संस्कृत के विद्यार्थी के लिए पाणिनि का व्याकरण आवश्यक है, उसी प्रकार भारतीय दर्शनों के जिज्ञासु के लिए यह अनिवार्य है । वैशेषिक विचारकों की दृष्टि अपेक्षाकृत उच्चस्तरीय और सूक्ष्म स्वीकार की जाती है । पृथिव्यादि सूक्ष्म भूत तत्त्वों को मूल मान कर प्रवृत्त होने के कारण यह वैशेषिक शास्त्र कहलाता है ।

तीसरा सांख्यदर्शन—भारतीय मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक चिन्तन के क्षेत्र में ऋषि कपिल अद्वितीय थे । गीता में **सिद्धानां कपिलो मुनिः । सम्यक् ख्यानम्,** अर्थात् सम्यक् विचार-विवेक ज्ञान ।

चौथा योगदर्शन—चित्त की वृत्तियों को बुराई से हटा कर शुभ गुणों में स्थिर कर परमेश्वर के सामीप्य में मोक्षप्राप्ति । प्रकृति के आत्यन्तिक संयोग की निवृत्ति ही मोक्ष और उसका उपाय है सम्यक् दर्शन।

पांचवां मीमांसादर्शन—धर्म एवं वेदार्थ विचार मीमांसा कहलाती है । वेदार्थ का विचार होने से यह दर्शन मीमांसादर्शन कहलाता है।

छठा वेदान्तदर्शन ब्रह्मसूत्र—वेद के अन्तिम भाग उपनिषदों का नाम वेदान्त है । उपनिषदें ही वेद के चरम सिद्धान्तों का रहस्य खोलती हैं ।

नास्तिक अवैदिक दर्शन भी छह हैं—चार्वाक, जैन तथा चार वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक—चार बौद्ध दर्शन । ये अवैदिक दर्शन वेदार्थ का समर्थन नहीं करते, चारों बौद्ध दर्शन आत्मा का अस्तित्व नहीं मानते, वे संसार की हर वस्तु को निरात्मक बताते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
हैं । चार्वाक दर्शन शरीर आदि से भिन्न आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता ।

इन दर्शनों में– भारतीय दार्शनिक चिन्तन में प्रकृति, पुरुष, जीव, आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि गूढ़ गहन तत्त्वों पर पर्याप्त गहराई-गम्भीरता से ऊहापोह, विचार-विमर्श किया गया है । इन भारतीय दार्शनिक ग्रन्थों या दर्शनों में बहुत गहरा आध्यात्मिक दार्शनिक चिन्तन है । प्राणिमात्र को जीवन का सच्चा आनन्द कैसे मिले, इसी तत्त्वज्ञान की उसमें गहराई से खोज की गई है । सभी भारतीय दार्शनिक चिन्तकों एवं दर्शनकारों की मान्यता है कि सच्चे आनन्द की प्राप्ति के लिए, सच्ची मुक्ति के लिए एवं दीर्घकालीन मोक्ष के लिए सब से पहली अनिवार्य शर्त है: शुद्ध, पवित्र जीवन ।

आहार, निद्रा, भय, मैथुन प्राणिमात्र में समान हैं, परन्तु मानव में केवल अपने लिए नहीं, दूसरों के सुख, दु:ख, कल्याण की भावना जागृत हुई । प्रारम्भिक मानव ने सृष्टि के प्रारम्भ से ही सोचना प्रारम्भ किया–मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, मेरे इस सांसारिक जीवन का लक्ष्य क्या है, यह संसार-जगत् क्या है, इस सृष्टि का स्रष्टा कौन है, यह सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई, भौतिक सुख क्या है, सच्चा सुख क्या है–इस सुख की प्राप्ति कैसे सम्भव है ।

इस दर्शनशास्त्र का अर्थ है– **'दृश्यतेऽअनेन इति दर्शनम् ।'** जिस माध्यम से सत्य देखा जाए, वह दर्शन है, दूसरे शब्दों में वस्तुओं का तात्त्विक स्वरूप । इस जगत् का स्वरूप क्या है ? क्या यह जड़ है या चेतन ? इस जगत् में मानव का दायित्व क्या है ? जीवन के श्रेष्ठ, सुन्दर और सुखी बनाने के क्या साधन हैं ? हम कौन हैं ? इस जगत् का क्या कोई नियन्ता है ? यदि कोई नियामक है तो उस तक पहुंचने या उसकी कृपा पाने का क्या कोई उपाय है ?

स्वभावत: जिज्ञासा होती है धर्म क्या है ? **अथातो धर्मजिज्ञासा** मीमांसादर्शन में कहा गया है–जो वेद द्वारा कहा गया हो जिसका ऐहलौकिक, पारलौकिक उन्नति ही लक्ष्य हो और जिसे प्रत्येक प्राणी चाहता हो वह धर्म है । **''चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म:।''** (मीमांसा दर्शन १।१।२) । दूसरी ओर वैशेषिक दर्शन में कहा गया है–जिससे सांसारिक उन्नति हो और मोक्ष की भी प्राप्ति हो उसे धर्म कहते हैं– **'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्म:।'**

भारतीय दर्शनों में बहुत गहन दार्शनिक चिन्तन है । प्राणिमात्र को जीवन का सच्चा आनन्द कैसे मिले, इसकी उसमें गहराई से खोज की गई है । इन सभी भारतीय दार्शनिक विचार-धाराओं में सच्चे आनन्द की प्राप्ति के लिए शुद्ध और पवित्र जीवन द्वारा मोक्ष-प्राप्ति लक्ष्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रखा गया है ।

भारतीय शास्त्रकारों की सीख है—मानव को चार पुरुषार्थ करने चाहिएं—१. धर्म, २. अर्थ, ३. काम और ४. मोक्ष । जिन कर्मों से सभी प्राणियों और समस्त समाज का धारण-पोषण होता है, उन्हें भारतीय तत्त्वचिन्तकों ने धर्म कहा है ।

धारणाद् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ॥

मनुस्मृति २।१२।

काम-इच्छा, कामना और विषय । मनुष्य अपने सुख के लिए सब काम करता है, परन्तु ये सारे कर्म धर्म के अनुकूल होने चाहिए। इसी प्रकार अर्थ का अर्थ है पैसा, सुख की उपलब्धि के लिए पैसा या धन चाहिए, यह धन भी धर्म के मार्ग से आए अधर्म से नहीं ।

चौथा पुरुषार्थ है—सब बन्धनों से छुटकारा या मुक्ति मोक्ष । ऐसे काम करना, उस मार्ग से चलना जिससे मनुष्य बार-बार जन्म न ले, इसी को मोक्ष या मुक्ति का मार्ग कहते हैं ।

इस प्रकार भारतीय चिन्तन में जीवन का लक्ष्य और आकांक्षा न केवल भौतिक साधनों—अर्थ, काम-इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न होने चाहिएं परन्तु वे सद्गुण और नैतिकता पर आधारित होने चाहिएं जिससे जीवन प्रदीप्त हो। धर्म एवम् आध्यात्मिक ज्योति और मोक्ष से वह अनुप्राणित हो । भारतीय चिन्तन के इन चारों लक्ष्यों में अन्तिम मोक्ष पर सर्वाधिक बल दिया गया है । कह सकते हैं कि भारतीय चिन्तन की दृष्टि व्यवस्थित सन्तुलित और समन्वित है और आचारशास्त्र एवं धर्म उससे पृथक् नहीं है । उसकी अन्तिम स्थिति सत्य की अनुभूति और प्रत्यक्ष अनुभव है ।

भारतीय दार्शनिक चिन्तन एवं दर्शनों की सब से बड़ी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है । प्रमुख आस्तिक वैदिक दर्शनों का उद्देश्य है कि नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को राग-द्वेष और अविद्या से छुड़ा कर सच्ची मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति कराना है ।

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः । न्याय० १।१।२२

जन्म-मरण रूप दुःख से छूट कर परमानन्द की प्राप्ति ही मुक्ति है । महर्षि गौतम दुःखों से छूटने को मुक्ति कहते हैं ।

तीनों प्रकारों के दुःखों से पूरी तरह छूट जाना ही मुक्ति है। कपिलाचार्य दुःखों से छूटने को ही मुक्ति कहते हैं ।

भारतीय चिन्तन एवं दर्शनों का प्रमुख तत्त्व आशावाद है । दुःखों को दूर करना और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दुःखों को दूर करने का मार्ग खोजना अभीष्ट है । इस प्रकार भारतीय दार्शनिक चिन्तन वर्तमान से असन्तुष्ट होकर उसे सुधारने के लिए प्रयत्नशील है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय दर्शनों की तीसरी विशेषता उनका नैतिक व्यवस्था में विश्वास है, मनुष्य जो भी कर्म करता है उसका लोप नहीं होता, अपितु उन कर्मों से एक अपूर्व की सृष्टि होती है, यही अपूर्व फलोत्पत्ति का प्रधान कारण है । न्याय-वैशेषिक दर्शनों में इस अपूर्व को अदृष्ट कहा गया है ।

भारतीय दर्शन की चौथी विशेषता कर्म-सिद्धान्त में आस्था है। मानव जो भी कर्म करता है उसका नाश कभी नहीं होता । कर्म-सिद्धान्त स्वीकार कर मानव पाप करने से बचता है, साथ ही शुभ कर्मों का अनुष्ठान कर मानव अपना भावी जीवन उच्च, दिव्य और महान् बना सकता है ।

भारतीय दर्शन में मुक्ति-मार्ग का निर्देश दिया गया है, यह उसकी पांचवीं विशेषता है । दार्शनिक चिन्तकों की धारणा है कि संसार में बन्धन अविद्या के कारण होता है । अविद्या बन्धन का कारण है तो ज्ञान मुक्ति का मूल । जीवन-यापन के दो रास्ते हैं—प्रेय और श्रेय। इसी प्रकार सुख दो तरह के हैं—एक है प्रेय और दूसरा है श्रेय । जो आरम्भ में सुख देता है, अन्त में दुःख उसे प्रेय कहते हैं और दूसरा है श्रेय—यह प्रारम्भ में कष्ट देता है परन्तु अन्त में उससे स्थायी मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ॥

कठ० १।२।१२

इस प्रकार प्रेय मार्ग मानव के पतन का मार्ग है तो श्रेय मार्ग मानव के मंगल का मूल है । भारतीय दार्शनिक चिन्तकों की दृष्टि में इस श्रेय रूपी मंगलमार्ग पर प्रवृत्त होने के लिए अष्टांग योग के यम-नियमों का अनुसरण करना चाहिए । इस जगत् के आवागमन के चक्र से मुक्ति के लिए त्रिविध तापों से छूटने, सच्चे ब्रह्म की प्राप्ति के लिए महान् प्रयत्न और पुरुषार्थ करने चाहिएं ।

उल्लेखनीय है कि यह सम्पूर्ण भारतीय दार्शनिक चिन्तन संक्षिप्त सूक्तियों और सूत्रों में प्रस्तुत किया गया है । इन सूत्रों को सरलता से स्मरण किया जा सकता है । ये सूत्र संकेत शब्दों के तुल्य हैं, उन्हें गुरुओं और परम्परा की सहायता से समझा जा सकता है । इसी के साथ भारतीय दर्शनों में गुरुओं और परम्परा दोनों की बड़ी महत्ता है ।

प्रत्येक भारतीय दर्शन अपने प्रथम प्रणेता महर्षि से सम्बद्ध है। जैसे न्यायदर्शन के प्रणेता गौतम हैं, तो कणाद वैशेषिकदर्शन के रचयिता हैं, महर्षि कपिल ने सांख्यदर्शन रचा है, चौथे योगदर्शन के स्रष्टा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
पतञ्जलि हैं, महर्षि जैमिनी का दर्शन मीमांसा है और वेदान्तदर्शन के रचयिता बादरायण व्यास माने जाते हैं ।

अपने पारस्परिक सम्बन्धों के कारण सहवर्त्ती सम्बद्ध ये छह आस्तिक दर्शन तीन समूहों-समान तन्त्रों में वर्गीकृत किए जाते हैं । सांख्य और योग एक समान समूह में अंगीकृत किए जाते हैं । सांख्य के दार्शनिक चिन्तन को योग विचारधारा वाले भी स्वीकार करते हैं। दोनों ही सर्वज्ञ भगवान् को प्रथम गुरु या शिक्षक के रूप में मानते हैं।

योग की विशेषता मानसिक नियन्त्रण का व्यावहारिक पहलू है। उसी के माध्यम से सांख्य का दार्शनिक चिन्तन प्रकृति से आत्मा के पृथक् अस्तित्व की उपलब्धि सम्भव है ।

यह भी उल्लेखनीय है कि किसी भी दार्शनिक सिद्धान्त की अवधारणा के बावजूद योग को एक साधना या प्रारम्भिक अनुशासन एवं नियम के साधन के रूप में सभी भारतीय दार्शनिक विचारधाराएं जिनमें बौद्ध और जैन भी सम्मिलित हैं स्वीकार करती हैं । आज उसने विज्ञान की सहायता से विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त कर ली है ।

वैशेषिकदर्शन न्याय के साथ वर्गीकृत किया जाता है । दोनों ही दर्शन यथार्थवाद और द्वैत-अनेकता को अंगीकार करते हैं। न्याय की विशेषता यह है कि तर्क और विचार-विमर्श संवाद एवं वाद के विज्ञान की प्रणाली पर आधारित है । वास्तव में दोनों ने संयुक्त होकर विभिन्न दर्शनग्राही समान विचार-धारा का रूप ग्रहण किया है, बाद में उन्होंने औपचारिक अर्थविज्ञान के रूप में एक नवीन पुष्ट तत्त्वज्ञान का विकास किया है ।

मीमांसा और वेदान्तदर्शनों को यद्यपि अपने सामान्य वैदिक आधार पर वर्गीकृत किया गया है तथापि उन दोनों में बुनियादी मतभेद हैं। मीमांसादर्शन कर्म और धर्म से सम्बद्ध है, जिसमें निर्धारित उत्तरदायित्व का परिपालन होना चाहिए, जबकि वेदान्त में कर्म या गतिविधियों का परित्याग किया जाता है । वेदान्त के अनुसार ज्ञान ही मोक्ष का साधन है । इस प्रकार मीमांसा वेदों के कर्मकाण्ड संहिता और ब्राह्मणों से सम्बद्ध है जबकि वेदान्त उपनिषदों से सम्बन्धित है। इसी प्रकार मीमांसा ने मूल वेद संहिता के अनुशीलन में वाक्य शास्त्र के रूप में अपनी स्थिति प्रतिष्ठित की है। इसी प्रकार न्याय ने एक सुनिश्चित परिशुद्ध चिन्तन-विज्ञान के रूप में एक प्रमाण-शास्त्र के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया है । इसलिए इन दोनों दर्शनों ने सभी दार्शनिक अध्येताओं के लिए आधारभूत बुनियादी नियम-प्रणाली मर्यादित की है, जबकि शेष मुख्य चिन्तन के रूप में अवतीर्ण होकर भी पृष्ठभूमि में चले गए हैं, और जो अपने पूरक योगदान के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
सुरक्षित हैं, तथापि वेदान्त चिन्तनधारा एक प्रमुख भारतीय आस्तिक चिन्तन के रूप में प्रतिष्ठित हुई है ।

वैदिक दर्शनों का सामंजस्य

न्याय, वैशेषिक, सांख्य,योग, मीमांसा और वेदान्त नाम के ये छह आस्तिक वैदिकदर्शन यद्यपि अनेक विषयों में परस्पर विराधी या भिन्न मत प्रस्तुत करते हैं, यहां तक कि सभी भारतीय दर्शनों में मुख्य प्रतिपाद्य विषय आत्मा के बारे में भी एकमत नहीं है। एक सामान्य जिज्ञासु विचारशील अध्येता को यह सब देखकर अनुभूति होती है –यह जिज्ञासा होती है कि इन दर्शनशास्त्रों का प्रणयन आत्मतत्त्व का साक्षात्कार करने वाले तत्त्वदर्शी महर्षियों ने किया है अथवा तर्कशील पण्डितम्मन्यों ने । सामान्य धारणा यही होती है कि इन दर्शनों के प्रणेताओं ने आत्मा का साक्षात्कार करने के बाद एक गूढ़ तत्त्व की खोज के लिए प्रयत्न किया होता तो उन सभी के द्वारा एक ही तत्त्व का साक्षात्कार होता, उस स्थिति में उनके द्वारा प्रणीत शास्त्रों में तत्त्व के सम्बन्ध में भिन्नता या मतभेद सम्भव नहीं होता । यदि किन्हीं तार्किक पण्डितों ने इन दार्शनिक चिन्तनों को प्रस्तुत किया होता तो उनके स्वतन्त्र तर्क प्रतिष्ठित और सर्वसम्मत नहीं माने जा सकते। इन दार्शनिक चिन्तनों की गम्भीरता, तत्त्वों की महत्ता एवं सारगर्भिता से स्पष्ट है कि उनके प्रणेता सामान्य पण्डित न होकर सूक्ष्म तत्त्ववेत्ता दार्शनिक ऋषि चिन्तक थे । उनके द्वारा प्रस्तुत चिन्तन एवं विचार-विमर्श का मुख्य विचार-तत्त्व एक ही मूल तत्त्व था । यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि एक अद्वितीय सत् चित् आनन्द स्वरूप ब्रह्म ही इन भारतीय चिन्तकों या दार्शनिकों का एक सर्वसम्मत तत्त्व था । अ उ म् सत् चित् आनन्द नियामक प्रभु परमात्मा, आत्मा और प्रकृति की मूल अवधारणा की गई । इस मूल तत्त्व एवं मूल तत्त्वों का मूल रूप समझने के लिए विभिन्न दार्शनिक चिन्तनों का स्वरूप विकसित हुआ । आत्मा, परमात्मा के विषय में जो मतभेद दीखता है, वस्तुतः वह एक ही विषय को भिन्न शैलियों और तर्कों द्वारा पुष्ट करने का प्रयत्न है । एक ही विषय को समझने में भिन्न अवस्थाओं, क्षमता और विचारों के कारण उनके प्रस्तुतिकरण में भी भिन्नता उभरी है।

स्वभावतः मानव आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानता, सामान्य मानव देहादि के धर्म आत्मा के धर्म मानता है, परन्तु एक सूक्ष्म चिन्तक सत् चित् आनन्द की स्थिति अंगीकार करता है । विभिन्न भारतीय दर्शनों या दार्शनिक चिन्तन में मानव एवम् उसकी आत्मा के सम्बन्ध में विभिन्न अवधारणाएं प्रस्तुत की गई हैं ।

न्यायदर्शन में महर्षि गौतम मानव आत्मा के कर्तृत्व, भोक्तृत्व

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एवम् अनेकत्व का प्रतिपादन करते हुए उसे नित्य और विभु कह कर देहादि से पृथक् अंगीकार करते हैं ।

वैशेषिकदर्शन में महर्षि कणाद की उक्त विवेचना को मान्य करते हुए महर्षि गौतम के मत का समर्थन करते हैं ।

सांख्यदर्शन में मुनि कपिल आत्मा की अनेकता स्वीकार करते हैं, वह उसके कर्तृत्व आदि का निषेधकर उसे ब्रह्मभाव के अधिक निकट ले जाने का प्रयत्न करते हैं । उस स्थिति में आत्मा के स्थूलत्व आदि देहधर्म और कर्तृत्व आदि बुद्धिधर्म नष्ट हो जाते हैं । इस अवस्था के प्रतिपादक चिन्तक मानव आत्मा को विशुद्ध चेतन तथा अनेक समझने लगता है ।

मुनि जैमिनी के मीमांसादर्शन में आत्मा के अनेकत्व का निराकरण करके अद्वितीय सत् चित् आनन्द रूप से उसका ज्ञान करने वाले चिन्तन या विचार-धारा की पुष्टि की गई है ।

महर्षि पतंजलि ने चित्तवृत्तियों के निरोध या नियन्त्रण को योग कहा–**'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।'** (योगदर्शन १।२)। मन में उठने वाले विचारों का नियन्त्रण करना । चित्तवृत्तियों का निरोध होने से द्रष्टा देखने वाला अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होता है ।

मीमांसा और योगदर्शन द्वारा चित्त की शुद्धि और स्थिरता प्राप्त होने पर महर्षि बादरायण के वेदान्तदर्शन के चिन्तन में सहायता मिलती है । यह दर्शन आत्मा के सजातीय, विजातीय, स्वगत आदि विविध अनेकताओं के स्थान पर सत् चित् आनन्द स्वरूप ब्रह्मरूप का दिग्दर्शन कराता है । अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सच्चिदानन्द ब्रह्म की भक्ति अपेक्षित है । इस वेदान्त दर्शन को हृदयंगम करने के लिए रामानुजाचार्य आदि आदि आचार्यों द्वारा प्रस्तुत वेदान्तदर्शन की विविध शाखाओं का अध्ययन सहायता दे सकता है ।

उक्त संक्षिप्त ब्यौरे से कहा जा सकता है सभी आस्तिक वैदिक दर्शन वेदों में उल्लिखित आत्मा के स्वरूप का एक चित्र प्रस्तुत करते हैं । इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनमें प्रस्तुतिकरण की भिन्नता होने के बावजूद कोई मौलिक बुनियादी भिन्नता नहीं है । सभी भारतीय आस्तिक वैदिक दर्शनों का मन्तव्य एवं गन्तव्य एक ही है । सम्भवतः इस स्थिति का ठीक उल्लेख पुष्पदन्त ने अपने महिम्नस्तोत्र में इन शब्दों में किया है–

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परभिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुलाटिलनानापथजुषाम्,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१४.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१४.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२२.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	२०.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००
महात्मा आनन्द स्वामी (जीवनी)	२५.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

ब्र. जगन्नाथ पथिक

सन्ध्या योग ब्रह्म साक्षात्कार	१२५.००
(वैदिक सन्ध्या से आलोक-प्राप्ति की पद्धति)	

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश (आधुनिक हिन्दी रूपान्तर)	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१२.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१८.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	१५.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ण पथ	१२.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द)	४०.००
(प्रभात-वन्दन, प्रार्थना-प्रकाश व शिवसंकल्प एकसाथ)	
वेद सौरभ	१२.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य	१५०.००
वैशेषिकदर्शन भाष्य	१५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य	१२५.००
योगदर्शन भाष्य	१००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०.००
सांख्य सिद्धान्त	२००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

On The Vedas	35.00
दीप्तिः (विवादास्पद लेखों का संग्रह)	८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	१५.००
विवाह और विवाहित जीवन	१८.००
जीवात्मा	४०.००
भगवत् कथा (उपनिषदों के आधार पर)	१४.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	१५०.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा (लेखों का संग्रह)	८०.००
महात्मा हंसराज (जीवनी)	६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (१ खण्ड) (सम्पूर्ण व्यक्तित्व व कृतित्व)	२४०.००
आर्य सूक्ति सुधा (आर्य विद्वानों की सूक्तियाँ)	१२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम	३५.००
सन्ध्या विनय	६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती (आर्य महापुरुषों के संस्मरण व शास्त्रार्थों की नोक-झोंक)	४०.००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में) (सम्पूर्ण कृतित्व व जीवनी)	६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी	१५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा (जीवनी)	२४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	१०.००
वैदिक धर्म	२५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

सहेलियों की वार्ता	२०.००

ले: देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय अनु: पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित (प्रामाणिक-अनूठा जीवन-चरित्र)	२५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका (चुने हुए लेखों का संग्रह)	१२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि (निबन्ध संग्रह)	६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल (वेद-मन्त्रों व सूक्तों का संग्रह)	५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा	४०.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य	२५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?	४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर (अनेक कवियों के गीत-भजनों का संग्रह)	२५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

वैदिक सम्पदा (वैदिक वाङ्मय के आधार पर मानवीय जीवन का विवेचन) १७५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

चित्र

स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२" ३.००

स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२" ३.००

स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग ३.००

महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वास्थ्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज ७.००

घर का वैद्य—लहसुन ७.००

घर का वैद्य—गन्ना ७.००

घर का वैद्य—नीम ७.००

घर का वैद्य—सिरस ७.००

घर का वैद्य—तुलसी ७.००

घर का वैद्य—आँवला ७.००

घर का वैद्य—नींबू ७.००

घर का वैद्य—पीपल ७.००

घर का वैद्य—आक ७.००

घर का वैद्य—गाजर ७.००

घर का वैद्य—मूली ७.००

घर का वैद्य—अदरक ७.००

घर का वैद्य—हल्दी ७.००

घर का वैद्य—बरगद ७.००

घर का वैद्य—दूध-घी ७.००

घर का वैद्य—दही-मट्ठा ७.००

घर का वैद्य—हींग ७.००

घर का वैद्य—नमक ७.००

घर का वैद्य—बेल ७.००

घर का वैद्य—शहद ७.००

घर का वैद्य—फिटकरी ७.००

घर का वैद्य—साग-भाजी ७.००

घर का वैद्य—अनाज ७.००

घर का वैद्य—फल-फूल ७.००

घर का वैद्य—धूप-पानी १५.००

सभी पच्चीस पुस्तकें पाँच आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)

घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)

घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)

घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)

घर का वैद्य (शहद, अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)

घर का वैद्य—धूप-पानी ४०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालोपयोगी

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार ३.००

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली २५.००
(अनेक बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित)

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव ५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि २.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम २.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय ३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय ४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ ५.५०
नैतिक शिक्षा—पंचम ५.५०
नैतिक शिक्षा—षष्ठ ६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम ६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम ६.००
नैतिक शिक्षा—नवम ९.००
नैतिक शिक्षा—दशम ९.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

योग शिक्षा-१ १२.००
योग शिक्षा-२ १०.००
योग शिक्षा-३ १०.००
योग शिक्षा-४ १०.००

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००
पंचयज्ञ प्रकाशिका १०.००
वैदिक संध्या १.००
सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) १२.००
संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००
गुरु विरजानन्द ५.००
स्वामी श्रद्धानन्द ५.००
धर्मवीर पं. लेखराम ५.००
मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००
स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०
स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०
महात्मा नारायण स्वामी ५.५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ९.००
देश के दुलारे ९.००
हमारे कर्णधार ९.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ १०.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००
बाल शिक्षा २.५०

नरेन्द्र गुप्ता

सच का फल ८.००
(कथाएँ उपनिषद की)

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएँ) ८.००

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ १२.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. वा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्य प्रकाशन

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्य समाज का इतिहास (भाग १)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग २)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ३)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ४)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ५)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ६)	३२५.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	५६.००
दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	५८.००
पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास	७७.००
प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	७२.००
मध्य एशिया व चीन में भारतीय संस्कृति	५८.००
प्राचीन भारत	८०.००
भारतीय संस्कृति का विकास	७७.००
प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार	५८.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	१३०.००
यूरोप का इतिहास	१४०.००
समाजशास्त्र	८०.००
चाणक्य	६५.००
मौर्य साम्राज्य का इतिहास	१३५.००
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	५८.००
भारत का इतिहास	५५.००
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	१७५.००
मध्यकालीन भारत	५८.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास	३२५.००
Political Thought of Swami Dayanand	150.00

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

एकादशोपनिषद्	१२५.००
उपनिषद् प्रकाश	११०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	१०५.००
संस्कार चन्द्रिका	१२०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	९५.००
होमियोपैथिक चिकित्सा	१२५.००
होमियोपैथिक चित्रण	१२५.००
होमियोपैथी का क ख ग	१००.००
होमियोपैथी के मूल सिद्धान्त	८०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From old age to youth through Yoga	80.00
चतुर्वेद गंगालहरी	९५.००
मेरी नानी की कहानी	३५.००
माँ और बच्चा	२५.००

महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश	५०.००
संस्कार विधि	१०.००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	४०.००
उपदेश मञ्जरी	१०.००
संस्कृत वाक्य प्रबोध	५.००
महर्षि दयानन्द (पं. लेखराम)	१००.००
Teachings of Gita	75.00
Light of Truth	125.00
Aryoudeshya Ratanmala	10.00

पं. भगवद्दत्त

सविता देवता	५८.००
बृहस्पति देवता	६५.००

पं. सुरेन्द्र कुमार

मनुस्मृति	१८०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समर्पण शोध संस्थान के प्रकाशन

योगेश्वर कृष्ण (चभूपति एम.ए.)	४०.००
वैदिक स्वर्ग (,,)	३०.००
वैदिक दर्शन (,,)	१५.००
अनादि तत्त्व (,,)	२५.००
आर्य ज्योति (रामानाथ वेदा.)	५०.००
वेद मंजरी (,,)	५०.००
वैदिक नारी (,,)	४०.००
अग्निहोत्र सर्वस्व (स्वामी दीक्षानन्द)	१०.००
उपहार सर्वस्व (,,)	५.००
मृत्युञ्जय सर्वस्व (,,)	१०.००
स्वाध्याय सर्वस्व (,,)	१२.००
उपनयन सर्वस्व (,,)	१०.००
दो पुटन के बीच (,,)	८.००
ए लविंग टोकन	५.००
वेदामृत (श्रीपाद दामोदर सातवलेकर)	८०.००
पंचयज्ञ प्रकाश (स्वामी सर्म्पणानन्द)	२५.००
श्रीमद्भगवत गीता (समर्पण भाष्य)	२०.००
श्रुति सौरभ (शिवकुमार शास्त्री)	६०.००
वैदिक विनय (अभयदेव वेदा.)	१२५.००
वैदिक उपदेश माला (,,)	१०.००
सामवेद (पूर्व. उत्तरार्ध) (दो भाग)	४००.००
सामवेद (संस्कृत भाष्य) (दो भाग)	७००.००

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्य समाज सिद्धान्त और प्रगति	४०.००
मनुष्य और मानव धर्म	१०.००
ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान	१०.००
प्रार्थना और चिन्तन	१२.००
हम क्या खाएँ घास या माँस	२५.००
The Parables & Dialogues from the Upnishadas	150.00
Self Life & Conciousness	12.00
Agnihotra	10.00
Architect of Arya Samaj	12.00
Man and his Religion	10.00
Critical Study of the Philosophy of Dayananda	50.00
Vedic Samdhya	8.00

स्वामी योगेश्वरानन्द

बहिरंग योग	७०.००
आत्मविज्ञान	८०.००
ब्रह्मविज्ञान	१००.००
दिव्य ज्योति विज्ञान	६०.००
प्राण विज्ञान	५०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	६०.००
निर्गुण ब्रह्म	३०.००
व्याख्यानमाला (५ भाग)	१५०.००
हिमालय का योगी-I+II	१५५.००
First Step to Higher Yoga	70.00
Science of Soul	80.00
Science of Divinity	100.00
Science of Divine Light	65.00
Science of Vital Force	40.00
The Essential Colourlessness of the Absolute	40.00
Science of Divine Sound	40.00
Beads of Sermons	30.00
Himalaya Ka Yogi-I+II	160.00

पँ. कपिल देव द्विवेदी

सुखी जीवन	१८.००
सुखी गृहस्थ	१२.५०
सुखी परिवार	१८.००
आचार शिक्षा	१०.००
नीति शिक्षा	१०.००
वेदों में नारी	२०.००
सुखी समाज	१८.००
वैदिक मनोविज्ञान	१८.००
यजुर्वेद सुभाषितावली	२५.००
सामवेद सुभाषितावली	२५.००
अथर्ववेद सुभाषितावली	३५.००
ऋग्वेद सुभाषितावली	४०.००
वेदों में आयुर्वेद	९०.००
Vedic Samdhya & Agnihotra	30.00
The Essence of The Vedas	200.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Svami Satya Prakash Sarasvati

Rigveda (13 vols)	2700.00
Athervaveda (5 vols)	1125.00
Samveda (2 vols)	1150.00
Yajurveda (1 vol)	500.00

स्वामी जगदीश्वरानन्द

देवर्षि दयानन्द चरित	२५.००
शुक्र नीतिसार	८०.००
सामवेद भाष्य	१००.००
बाल शिक्षा	६.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

भूमिका भास्कर (दो खण्ड)	३००.००
सत्यार्थ भास्कर (दो खण्ड)	७००.००
संस्कार भास्कर	१५०.००
तत्त्वमसि	४०.००
आर्यों का आदिदेश और उनकी सभ्यता	५०.००
रामायण : भ्रान्तियाँ और समाधान	६०.००
आर्य सिद्धान्त विमर्श	२५.००
गौ की गुहार	१५.००
भारत भाग्य विधाता : दयानन्द	१२.००
Ishopanishad	45.00
Brahmasutra	300.00
The Riddle of Life & Death	20.00
Vedic Concept of God	50.00

प्रो. रामविचार एम. ए.

वेद सन्देश (दो खण्ड)	१००.००

रमेश मुनि वानप्रस्थ

वैदिक यज्ञानुष्ठान विधि:	८०.००

चमूपति एम. ए.

विचार वाटिका (दो भाग)	१००.००

ब्र. नन्दकिशोर

मातृ गौरव	५.००
सत्संग गौरव	९.००
पितृ गौरव	८.००
राष्ट्र गौरव	३०.००
विद्या गौरव	३०.००

ट्रस्ट के प्रकाशन

अष्टाध्यायी भाष्य (तीन भाग)	१८०.००
अष्टाध्यायी (मूल)	६.००
संस्कृत पठन-पाठन की सरलतम विधि (दो खण्ड)	७०.००
महाभाष्य (तीन खण्ड)	२७५.००
प्यारा ऋषि (म. आनन्द स्वामी)	५.००
ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन	५०.००
ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन	१४०.००
ऋग्वेद परिचय	२०.००
वैदिक गृहस्थ आश्रम	५०.००
वैदिक जीवन	३०.००
ध्यान योग प्रकाश	२५.००
Anthrology of Vedic Hymns	100.00
Vedic Concept of Yog & Meditation	50.00
Success Motivating Vedic Lores	50.00

डॉ. भवानीलाल भारतीय

नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द	६०.००
ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी	२०.००
मैंने ऋषि दयानन्द को देखा	१०.००
वैदिक मातृभूमि वंदना	२०.००

डॉ. ओमप्रकाश वेदालंकार

मृत्यु से अमृत की ओर	२०.००
आर्यों का परम धर्म	७.००
नए घर के दो पंछी	१७.००
अपने आपको कैसे पढ़ें	१७.००
प्रभु के द्वार पर	२२.५०

विजय बिहारीलाल माथुर

आर्य समाज के नियमों की व्याख्या (हिन्दी)	१५.००
आर्य समाज के नियमों की व्याख्या (अंग्रेजी)	१५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी. ए. वी. प्रकाशन

महर्षि दयानन्द और उनके अनुवर्ती	५०.००
सूक्तियाँ (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
प्रेरक प्रवचन (महात्मा हंसराज)	३५.००
क्रान्तिकारी भाई परमानन्द	५०.००
महात्मा हंसराज (आनन्द स्वामी)	४८.००
Swami Daynand	35.00
Story of My Life (Lajpat Rai)	50.00
Mahatma Hansraj (Eng.)	35.00
Rishi Dayanand Saraswati	30.00
Reminiscences and Reflections of a Vedic Scholar (Prof. Satyavrat)	60.00
The Arya Samaj (Lajpat Rai)	50.00
Wisdom of the Vedas	35.00
Swami Dayanand through Non Arya Samajist Eyes	75.00
Chips from a Vedic Workshop	80.00
The Original Philosphy of Yoga	100.00

आयुर्वेद-स्वास्थ

चरक संहिता (दो भाग)	४५०.००
सुश्रुत संहित	१९८.००
आयुर्वेद नवनीत	६५.००
आयुर्वेद चिकित्सा सार	३०.००
आयुर्वेद की पेटेन्ट दवाईयाँ	६०.००
आयुर्वेद के चमत्कार	५०.००
योग के अद्‌भुत चमत्कार	३०.००
भोजन द्वारा चिकित्सा	५५.००
क्या खाएँ और क्यों	४०.००
चिकित्सा आलोक	५०.००
आरोग्य दर्पण	२५.००

शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक राजनीतिशास्त्र	७५.००
वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा	१००.००
वेद और पर्यावरण	२५.००

सभा के प्रकाशन

ऋग्वेद भाष्यम (पाँच भाग)	६२५.००
अथर्ववेद भाष्यम (दो भाग)	२७५.००
सामवेद भाष्यम (एक भाग)	९०.००
यजुर्वेद भाष्यम (एक भाग)	१२५.००
वैदिक संपत्ति	१२५.००
कुलियात आर्य मुसाफिर	२००.००
मृत्यु और परलोक	१६.००
योग रहस्य	१४.००
पं. रामचन्द्र देहलवी लेखावली	१८.००
आर्य पर्व पद्धति	१६.००
आर्य सिद्धान्त सागर	१२५.००
वैदिक यज्ञ दर्शन	६०.००
संगीत रत्न प्रकाश	५०.००
कर्त्तव्य दर्पण	१०.००
विद्यार्थी जीवन रहस्य	५.००
आर्य समाज क्या है	५.००
कल्याण मार्ग का पथिक	१५.००
स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द	१२.००
श्री मद्‌यानन्द प्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	४०.००
संस्कार चन्द्रिका (भीम सेन शर्मा)	१२५.००
आत्म दर्शन	१०.००
आर्य समाज का इतिहास (दो खण्ड)	१२५.००
What is Arya Smaj?	30.00
Journey of the Soul	35.00
Science in the Vedas	25.00
Rigveda (5 Vols.)	420.00
Atharveda (2 Vols.)	130.00
Samveda	65.00
Yajurveda	125.00
Introduction of the Veda	30.00
Sanskar Vidhi	35.00
Nine Upnishads	20.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई बाल पुस्तकें

जागरण की वेला

नैतिकता, मानवता, धर्म, उदात्तता, दिव्यता—इन सब शब्दों में एक ही भाव-धारा प्रवाहित है । सच्चा मानव वही है, जिसे हर कोई प्यार करे । सच्चा धर्म भी वही है, जिसकी बातें हर किसी को प्यारी लगें । सभी बच्चे विश्वात्मा बनें, विश्व-मानव बनें, आर्य (श्रेष्ठ) कहलाएं—यही दिव्यता है, यही उदात्तता है, यही नैतिकता है, यही धर्म है । जो लोगों को वर्गों में बांट दे, वह केवल मजहब है, सम्प्रदाय है, मत है, पंथ है, वह धर्म नहीं हो सकता । नैतिकता या धर्म वही है जिसमें कोई ऊंच-नीच न हो, जो भाईचारा पैदा करे । सभी लोग, सभी बालक और बालिकाएं सब को साथ लेकर चलें, सभी एक-समान सोचें, सभी मिलकर श्रम करें, हर कोई सौ-सौ हाथों से कमाए और हजार-हजार हाथों से जरूरतमंदों में बांट दे, सभी बच्चे 'पीर पराई जानें'—यही वेदों का संदेश है, यही नैतिकता है, यही आर्यत्व है, यही विश्व-धर्म है ।

'नैतिक जागरण' के पांच भागों में हम कुछ ऐसे पाठ दे रहे हैं, जिन्हें सभी माता-पिता और गुरुजन अपने बच्चों या छात्रों को देना चाहेंगे।

यह पाठ-माला जहां सभी पाठशालाओं और वाचनालयों की शोभा बढ़ाएगी, वहां भेंट-उपहार के लिए सर्वोत्तम मानी जाएगी ।

प्रस्तुत माला की पुस्तकें—

१. सफल जीवन
२. सच्चा सुख
३. सेवा के वरदान
४. मन की उड़ान
५. आनन्द के स्रोत

(प्रत्येक का मूल्य १०.०० रुपये)

सभी पुस्तकें आकर्षक आवरण, सुन्दर बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित। साफ-शुद्ध छपाई ।

सत्य का फल (कथाएं उपनिषदों की)	८.००
जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएं)	८.००
बाल जीवन-सोपान (स्वामी ब्रह्ममुनि)	१४.००

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

R.No. 622/57 Regd. No. DL - 12026/96

विशेषांक

'अजब हैरान हूं भगवन्.....'

इस प्रसिद्ध भजन के लेखक सुप्रसिद्ध कवि तथा
पारसी रंगमंच के महान् नाटककार

पं० नारायणप्रसाद बेताब

के ऋषि दयानन्द के जीवन प्रसंगों पर

लिखे गये चार प्रसिद्ध मुसद्दसों (लम्बी कविंताओं) का
प्रथम बार प्रकाशन

साथ में कवि बेताब के व्यक्तित्व, जीवन तथा कृतित्व की शोध पूर्ण जानकारी। बेताब जी का दुर्लभ चित्र भी दिया जा रहा है ।

सम्पादन : डॉ० भवानीलाल भारतीय

लगभग १०० पृष्ठों का यह विशेषांक अगस्त माह में आपको प्राप्त होगा। अपना वार्षिक शुल्क बीस रुपये आज ही भेजें। जिन सदस्यों का शुल्क ३१।७।९६ तक प्राप्त हो जाएगा उन्हें यह विशेषांक अगस्त ९६ में भेजा जाएगा ।

—अजयकुमार

दो अनूठे प्रकाशन

सन्ध्यायोग ब्रह्म साक्षात्कार : *ब्र० जगन्नाथ पथिक*

प्राचीन काल में कतिपय साधनाओं में गति प्राप्त करने के बाद तपः-पूत ऋषियों ने ब्रह्मयज्ञ और वैदिक सन्ध्या के दिव्य अनुष्ठान की प्रणाली का विकास किया था। साधक समुच्चय और अष्टांग योग की वैज्ञानिक साधना, उसे सिद्ध करने की पद्धति इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है जिससे क्लेश कर्मों का नाश कर अध्यात्म-आलोक की प्राप्ति सम्भव है।

मूल्य : १२५.०० रु०

वैदिक सम्पदा : *पं० वीरसेन वेदश्रमी*

वैदिक वाङ्मय के आधार पर मानवीय जीवन और आचार को एक व्यवस्थित रूप देने के लिए इस ग्रन्थ से एक जिज्ञासु साधक को अपने स्वाध्याय और अभ्युदय के लिए पर्याप्त ज्ञान-सामग्री उपलब्ध हो सकती है। आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान की तुलना में प्राचीन वैदिक सम्पदा का अध्ययन करने वाले जिज्ञासुओं के लिए ग्रन्थ उपयोगी है।

मूल्य : १७५.०० रु०

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिण्टर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया ।
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi